आगम के अनमोल रत्न

*

सम्पादक-हस्तीमुनि

ज्ञानवर्द्धक पुस्तक भण्डार के प्रकाशन

गुरुदेव का दिव्य जीवन	संजिल्द	ले. पं० मुनिश्रीहस्तीमल जी म. सा.	१–५०
तपस्वी श्रीरोडीदासजीम. का जीवन सचित्र		,,	१–५०
आगम के अनमोल रत्न			८–०
यशोधर चरित्र रचयिता पं० मुनिश्री चौथमलजीम. सा.			३७ नये पैसे
विद्या विलास चरित्र	,,	,,	२५ नये पैसे
हंसवच्छ चरित्र	,,	,,	२५ ,,
अमर चरित्र, ऋषिदत्ता चरित्र		,,	३७ ,,
विक्रम–हरिश्चन्द्र	,,	,,	२५ ,,
भीमसेन हरीसेन	,,	,,	३१ ,,
प्रद्युम्न चरित्र	,,	,,	४४ ,,
विपाक सूत्र रास	,,	,,	५० ,,
चन्द्रसेन लीला	,,	,,	३१ ,,
चन्दनबाला चरित्र	,,	,,	१५ ,,
नवरत्न किरणावली	,,	,,	५० ,,
लीलापत झणकारा	,,	,,	२५ ,,
तेतली पोट्टिला	,,	,,	
कमल कुसुम कर्णिका	,,	,,	३७ ,,
महेश्वरदत्त चरित्र	,,	,,	३७ ,,

डाक खर्च अलग

पुस्तके व सूची पत्र मंगाने का पता—

श्रीज्ञानवर्द्धक पुस्तकभण्डार–व्यवस्थापक कन्हैयालालजी सिंधवी

मु० पो० महलों की पीपली वाया—कांकरोली (राजस्थान)

आगम
के
अनमोल रत्न

संपादकः

मुनि हस्तीमल 'मेवाड़ी'

सम्पादक —
पं० मुनिश्री हस्तीमलजी महाराज 'मेवाड़ी'

प्रकाशक —
धनराज घासीराम कोठारी
लक्ष्मी पुस्तक भण्डार
गान्धी मार्ग, अहमदाबाद-१

प्रथम संस्करण—१९६८

ગુ. સા. પ્ર. વિ. મંડળના ઠરાવ
કિંમત રૂ. ૨૦-૦૦
અનુસાર સુધારેલી કિંમત

प्राप्ति स्थान—
कन्हैयालाल जी सिंघवी
श्री ज्ञानवर्द्धक पुस्तक भंडार
मु. पो. महलों की पिपली
वाया—कांकरोली
(राजस्थान)

मुद्रक —
स्वामी श्रीत्रिभुवनदासजी शास्त्री
श्री रामानन्द प्रिन्टिंग प्रेस,
कांकरिया रोड,
अहमदाबाद-२२

प्राक्कथन

Lives of great men, all remind us.
We can make our, lives sublime.

महापुरुषों के महान् जीवन हमें याद दिलाते हैं कि हम भी उनके पद-चिह्नों पर चलकर अपने जीवन को ज्योतिर्मय बना सकते हैं। यह एक प्रसिद्ध कवितांश है। इसका तात्पर्य-'महाजनो येन गतः सः पन्थः' से भिन्न नहीं है। ये ही नहीं इन से भी कहीं अधिक प्रेरक सूक्तियां शास्त्रों, ग्रन्थों और लोकोक्तियों में उपलब्ध हैं, जो हमें विगत महामानवों के जीवन से प्रेरणाएँ लेने का संदेश देती हैं।

सूक्तियों के इस सम्प्रेरक विधान अथवा निर्देश को हृदयगम करने के साथ ही मन में एक प्रश्न उभरता है कि जो व्यतीत हो चुका है उसका स्मरण क्यों? अतीत भूत है, हम वर्तमान हैं, हमारी गति भविष्य के लिये अपेक्षित और आशान्वित है। विगत को याद कर हम पीछे क्यों जायें? क्यों प्रकृति के भूले बिसरे चित्रों को उभार उभार कर सन्तोष माने?

इस प्रश्न का समाधान आवश्यक है, अतः लगे हाथ इस पर थोड़ा विचार करलें।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि जो आज है वह कल भूत होगा और जो उपस्थित नहीं है वह भविष्य कल वर्तमान होगा। ऐसी स्थिति में जीवन भूत, वर्तमान और भविष्य से अनुबद्ध एक ऐसी प्रक्रिया है जो सत्य है।

भविष्य को वर्तमान के रूप में पाकर भी हम विगत को भूल नहीं सकते। हम देखते हैं कि पशु भी पूर्व परिचित स्थान की ओर स्मृतिके सहारे दौड़ जाते हैं। हम तो मानव हैं, मनन-धर्मी मन की गति को केवल वर्तमान में कैद नहीं कर सकते।

स्मृतियों का विशाल खजाना जो बुद्धि में सुरक्षित है उसे कहीं दफना नहीं सकते, क्योंकि स्मृति ही हमारी बुद्धि का प्राणवान् तत्त्व है जो इसकी महत्त्वपूर्ण उपयोगिता को सिद्ध करता है।

स्मृति और अनुभव की उपयोगिता सिद्ध होने पर यह भी मानना होगा कि ये किसी एक जीवन से ही अनुबन्धित नहीं हैं।

विराट् विश्व के प्रांगण में अनन्त जीवन अठखेलियाँ कर रहे हैं। संस्कार और पुरुषार्थ के आधार से अनन्त प्रवृत्तियाँ संचालित हो रही हैं। उनमें हम यह भी देख रहे हैं कि कुछ जीवन प्रकृष्ट तेजस्विता प्रकट कर विश्व को प्रकाशमय बना रहे हैं तो कुछ अन्धकार की काली घटाएं उभड़ाकर कालुष्य का निर्माण कर रहे हैं।

किसी उर्दू शायर ने ठीक ही कहा है :—

कुछ गुल तो दिखला के बहार अपनी हैं जाते
कुछ सूखके काँटों की तरह हैं नज़र आते,
कुछ गुल हैं कि फूले नहीं जामे में समाते,
कुछ गुल ऐसे हैं जो खिलने भी नहीं पाते॥

यदि एक बार और प्रकारान्तर से सोचे तो संसृति के अविरल क्रम से गुजरनेवाले व्यक्तियों को सामान्यतया तीन उपमाओं से विभाजित कर सकते हैं। हम देखते है गगनगामी ग्रहों के तीन प्रकार हैं।

(१) चन्द्र और सूर्य जो स्वयं देदीप्यमान हैं, साथ ही अन्य को भी प्रकाशित करने की क्षमता रखते हैं। (२) सितारे, जो स्वयं दमकते अवश्य हैं, किन्तु निशाजनित विकराल अन्धकार को छिन्न-भिन्न करने की क्षमता उनमें नहीं होती। न वे अन्य पदार्थों को प्रकाशित ही कर पाते हैं। (३) राहु, केतु स्वयं तो अन्धकार-पूर्ण हैं ही। यदि ये चन्द्र सूर्य से किसी तरह सम्बन्धित भी हो जाये तो उनकी प्रभा को भी अवरुद्ध कर देंगे।

जगतीतल पर भी वे नर श्रेष्ठ हैं जो स्वयं सत्य, शिव और सुन्दर स्वरूप ज्योतिर्मयी आभा से अलंकृत हैं और अपने प्रकाशपूर्ण व्यक्तित्व के द्वारा कोटि कोटि जनगण का मार्ग प्रदर्शन करते हैं। वे चन्द्र सूर्य से कई गुने अधिक महान् हैं। किन्तु ऐसे नरोत्तम तो बहुत कम पाये जाते हैं अधिकतर तो राहु-केतु के साथी ही मिलेंगे जो स्वयं बुराइयों एवं विकृतियोंसे तमसावृत हैं तथा औरोंको भी ऐसे ही बनाने में लगे हुए हैं। हां, कहीं कहीं ऐसे सरल व्यक्तित्व भी मिल सकते हैं जो सितारों के समान स्वयं कर्तव्यरत, श्रद्धा और ज्ञान के आलोक से आलोकित हैं किन्तु वे अपने आगे पीछे बहुत दूर दूर तक फैले अज्ञान अन्धकार को नहीं मिटा पाते।

निस्सन्देह प्रथम श्रेणी के महामानव नितान्त उपास्य हैं, क्योंकि वे उत्तम हैं। वे युग-प्रवर्तक महान् व्यक्तित्व दैहिक दृष्ट्या विलीन हो भी जाये, तदपि उनके महान आदर्श और उत्तम चरित्र युग युग तक श्रोतव्य, मन्तव्य और अनुकरणीय होते हैं।

राहु केतु के तुल्य नर-पिशाचों के चरित्र तो हैं ही। हाँ, सितारों के तुल्य सामान्यतया अच्छे जीवन समादरणीय अवश्य हैं।

यह बात पहले कही जा चुकी है कि हम अतीत को नितांत विस्मृत नहीं कर सकते। क्योंकि उससे प्रेरणा लेकर ही भविष्य की उज्ज्वल कल्पनाओं को वर्तमान में देख सकते हैं। इस तरह जब हम अपनी स्मृति और अनुभव को इतना महत्व देते हैं तो क्य नहीं हम उन प्राचीन अनुभवों से भी लाभ उठाएं जो हमारे अपने अनुभवों से कई गुने अधिक स्वच्छ और पूर्ण हो सकते हैं।

वैसे भी आज का जन-जीवन अधिकाधिक उलझन-पूर्ण और अशांत होता जा रहा है। नयी नयी समस्याओं के नागपाश बनकर जीवन को जकड़ रहे हैं। आणविक महा विनाश की काली छाया प्रतिदिन गहरी होती जा रही है। ऐसी कठिनतम परिस्थिति